DR. DAYAL M. PARMAR

Dr. Dayal M. Parmar, also popularly known as "Dayalmuniji" is a distinguished Sanskrit scholar, Ayurvedic doctor, professor, author, and dedicated translator.

2. Born on 28th December, 1934 in Tankara, Gujarat in a humble lower-middle-class tailor family, Dr. Parmar completed his primary education in 1947 at Tankara. Demonstrating exceptional proficiency in Sanskrit learnt at Arya Samaj, he served as a teacher at Maharshi Dayanand Vividhlakshi Vidyalaya before pursuing Ayurvedic education, earning a B.S.A.M. degree from Shri Gulabkuvarba Ayurved Mahavidyalaya in 1968.

3. Beginning his career as a demonstrator at Shri Gulab Kuvarba Ayurved Mahavidyalaya, Dr. Parmar eventually became the head of the Kayachikitsa Department until retirement. Concurrently, he held the position of professor of Ayurveda, and continued his journey as a prolific writer and researcher, authoring 18 Ayurvedic texts recognized as reference books by the University of Ayurveda. Among his notable works were detailed interpretations of the Charaka Samhita and other core texts. Additionally, he dedicated 20 years of his post retirement life for honorary service at the Ayurvedic clinic in Arya Samaj Tankara. He cured thousands of patients and improved the lives of many others.

4. Dr. Parmar's literary achievements included the monumental task of translating all four Vedas from Sanskrit to Gujarati, encompassing over 20,000 mantras and 700,000 words. He was greatly inspired by Shri Acharya Gyaneshwarji, Vanprastha Sadhak Aashram, Rojad. He authored over 50 books, including 18 reference books on Ayurveda approved by Gujarat Ayurvedic University.

5. Dr. Parmar has been honoured with numerous honours and awards. In 2007, he received the Ayurveda Chudamani Award from the Governor of Gujarat, followed by a Lifetime Achievement Award from RAJAYUCON in 2009 and the Arya Karmayogi Award from Arya Samaj, Mumbai, in 2010. In 2015, Gujarat Ayurvedic University conferred upon him the title of Doctor of Literature (Ayurved), and in 2020 he was honoured with the Sanskrit Sahitya Akademi Award by the Government of Gujarat.

डॉ. दयाल एम. परमार

"दयालमुनि जी" के रूप में लोकप्रिय डॉ. दयाल एम. परमारजी संस्कृत के प्रकांड विद्वान, आयुर्वेद के चिकित्सक, प्रोफेसर, लेखक और समर्पित अनुवादक हैं।

2. टंकारा, गुजरात के एक अत्यंत साधारण निम्न मध्यवर्गीय परिवार में 28 दिसम्बर, 1934 को जन्मे डॉ.परमार ने वर्ष 1947 में अपनी प्राथमिक शिक्षा टंकारा में पूरी की थी। उन्होंने आर्य समाज में संस्कृत सीखी और उसमें असाधारण प्रवीणता का प्रदर्शन करते हुए, महर्षि दयानंद विविधलक्षी विद्यालय में शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। इसके बाद,वर्ष 1968 में श्री गुलाब कुँवरबा आयुर्वेद महाविद्यालय से आयुर्वेद में बीएसएएम डिग्री प्राप्त की।

3. डॉ. परमार श्री गुलाब कुँवरबा आयुर्वेद महाविद्यालय में निदर्शक के रूप में करियर शुरू करते हुए, सेवानिवृत्त होने तक कायाचिकित्सा विभाग के अध्यक्ष के पद पर प्रतिष्ठित हुए। इस दौरान उन्होंने आयुर्वेद के प्रोफेसर का पद संभाला और एक प्रखर लेखक और शोधकर्ता के रूप में अपनी यात्रा जारी रखी। उन्होंने आयुर्वेद पर 18 पुस्तकों की रचना की जिन्हें आयुर्वेदिक विश्वविद्यालयों में संदर्भ ग्रंथ के रूप में मान्यता प्राप्त है। उनकी उल्लेखनीय कृतियों में चरक संहिता और अन्य मूल ग्रंथों की विस्तृत व्याख्याएँ शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, सेवानिवृत्ति के उपरांत उन्होंने अपने जीवन के बहुमूल्य 20 वर्ष आर्य समाज टंकारा के आयुर्वेदिक चिकित्सालय में मानद सेवा के रूप में समर्पित कर दिए। उन्होंने हजारों रोगियों का उपचार किया और उनकी सेवा से कई अन्य लोगों के जीवन में सुधार हुआ है ।

4. डॉ. परमार की साहित्यिक उपलब्धियों में सभी चार वेदों का संस्कृत से गुजराती में अनुवाद करने का महत्वपूर्ण कार्य शामिल था, जिसमें 20,000 से अधिक मंत्र और 700,000 से अधिक शब्द शामिल हैं। वह श्री आचार्य ज्ञानेश्वरजी, वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ से बहुत प्रेरित थे। उन्होंने 50 से अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें गुजरात आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त आयुर्वेद पर 18 संदर्भ पुस्तकें भी शामिल हैं।

5. डॉ. परमार को अनेक सम्मान और पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। वर्ष 2007 में, उन्हें गुजरात के राज्यपाल द्वारा आयुर्वेद चूड़ामणि पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसके बाद वर्ष 2009 में राजयुकोन द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार और वर्ष 2010 में आर्य समाज, मुंबई द्वारा आर्य कर्मयोगी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वर्ष 2015 में, गुजरात आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (आयुर्वेद) उपाधि से सम्मानित किया था और वर्ष 2020 में उन्हें गुजरात सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य अकादमी सम्मान प्रदान किया गया था।